पद

2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.
सूरदास द्वारा रचित तथा आपके द्वारा पठित पदों की भाषा तथा सूरदास की प्रमुख रचना के नाम लिखकर उनकी एक-एक विशेषता बताइए।

Answer:
हिंदी-साहित्य में कृष्ण भक्ति काव्य-धारा के प्रतिनिधि भक्त कवि सूरदास द्वारा रचित तथा मेरे द्वारा पठित पदों की भाषा ब्रज है। सूरदास जी की ब्रजभाषा में चित्रात्मकता, आलंकारिकता, भावात्मकता, सजीवता, प्रतीकात्मकता एवं बिम्बात्मकता पूर्णरूप से विद्यमान हैं। उन्होंने ब्रजभाषा को ग्रामीण जनपद से हटाकर नगर एवं ग्राम के संधिस्थल पर ला बिठाया। ब्रजभाषा की ठेठ माधुरी यदि संस्कृत और अरबी-फारसी के शब्दों के साथ सजीव शैली में जीवित रही है, तो वह सूर की भाषा में ही है। सूरदास की प्रमुख रचनाओं में 'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' तथा 'सूर सारावली' शामिल हैं।
'सूरसागर' में राधा-कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन है। सूर ने मानव प्रेम की गौरवगाथा के माध्यम से मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण किया है। 'सूर सारावली' को अनेक विद्वान 'सूरसागर' का सार मानते हैं, जबकि 'साहित्य लहरी' सूरदास के सुप्रसिद्ध दृष्टकूट-पदों का संग्रह है।

Question 2.
'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से कवि क्या भाव प्रकट करना चाहता है।

Answer:
'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से कवि यह प्रकट करना चाहते हैं कि तेल की गागर जल में रहकर भी उससे निर्लिप्त रहती है, उस पर जल-बूँदों का कोई प्रभाव नहीं होता। उसी प्रकार कृष्ण का सामीप्य पाकर भी उद्धव प्रेम के आकर्षण तथा वियोग की पीड़ा को नहीं समझ पाए।

2015
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.
उद्धव के गुरु कौन हैं? उन्होंने उन्हें कौन-सा ग्रंथ पढ़ाया है?

Answer:
सूरदास के पदों के अनुसार उद्धव के गुरु श्रीकृष्ण हैं। उन्होंने उद्धव को ज्ञान मार्ग रूपी ग्रंथ पढ़ाया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 4.

गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

Answer:

गोपियों द्वारा उद्धव को व्यंग्य में भाग्यवान कहा गया है। भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति अलंकार का यहाँ प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा कुछ जाता है और वास्तविक अर्थ कुछ और होता है। गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कहकर प्रशंसा करती हुई प्रतीत होती हैं, परंतु वास्तव में वे उन्हें भाग्यहीन कह रही हैं। इसका कारण है कि उद्धव श्रीकृष्ण के सान्निध्य में रहकर भी उनके असीम प्रेम से वंचित हैं। वे प्रेम-सागर में रहकर भी प्रेम के बंधन में न तो बँध पाए और न प्रेम की गहराई से परिचित ही हो पाए। यह स्थिति उद्धव के लिए वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण ही कही जाएगी।

Question 5.

'जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।' इस पंक्ति द्वारा गोपियों की किस मनःस्थिति का वर्णन किया गया है?

Answer:

'जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी'– इस पंक्ति में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के प्रेम में अनुरक्त गोपियों की मनः स्थिति का वर्णन किया है। वे श्रीकृष्ण के प्रेम में इस प्रकार डूबी हुई हैं कि दिन-रात, सोते-जागते, यहाँ तक कि स्वप्न में भी श्रीकृष्ण के नाम की रट लगाए रहती हैं। वे श्रीकृष्ण को मन, कर्म और वचन से अपने हृदय में बसाए हुए हैं। उन्हें श्रीकृष्ण के बिना संसार सूना लगता है। वास्तव में इस पंक्ति में गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति हुई हैं।

Question 6.

गोपियाँ योग संदेश को कैसे लोगों के लिए उपयुक्त मानती हैं?

Answer:

गोपियाँ योग-संदेश के लिए उन लोगों को उपयुक्त मानती हैं जिनके मन चकरी की तरह अस्थिर हैं, चित्त चंचल हैं, हमेशा भटकते रहते हैं तथा जिनका श्रीकृष्ण के प्रति स्नेह-बंधन अटूट नहीं है। गोपियाँ तो स्वयं पहले से ही श्रीकृष्ण-प्रेम के प्रति एकाग्रचित्त हैं। उनके मन न तो चंचल हैं और न भ्रमित हैं। भ्रमित और अस्थिर लोगों को ही योग की शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 7.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।

(क) किसके मन की बात मन में रह गई और क्यों?

(ख) गोपियाँ क्या व्यथा सह रही थीं और किसके बल पर सह रही थीं?

(ग) गोपियों की विरहाग्नि और अधिक क्यों बढ़ गई?

(घ) 'धार बही' का क्या आशय है?

(ङ) गोपियाँ धीरज धारण क्यों नहीं कर पा रही थीं?

Answer:

(क) गोपियों के मन की बात मन में ही रह गई क्योंकि गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं, फिर भी वे अपने प्रेम को श्रीकृष्ण के सम्मुख प्रकट नहीं कर पाईं।

(ख) गोपियाँ श्रीकृष्ण के वियोग में विरह व्यथा को सह रही थीं। उन्हें यह विश्वास था कि श्रीकृष्ण एक-न-एक दिन ब्रज वापिस अवश्य आएँगे।

(ग) गोपियों की विरहाग्नि बढ़ने का कारण श्रीकृष्ण के मित्र उद्धव का ब्रज में आना एवं गोपियों को योग का संदेश देना है।

(घ) 'धार बही' के द्वारा गोपियाँ यह कहना चाहती है कि वे श्रीकृष्ण से अत्यधिक प्रेम करती हैं और उनके वियोग की पीड़ा को इस आशा से सहन कर रही थीं कि एक-न-एक दिन श्रीकृष्ण ब्रज अवश्य लौटकर आएँगे, परंतु उन्होंने आशा के विरुद्ध योग का संदेश देकर विपरीत धारा को बहाया है।

(ङ) गोपियाँ धीरज धारण इसलिए नहीं कर पा रही थीं क्योंकि जिनके कारण उन्होंने अपनी मर्यादाओं को छोड़ दिया, उन्होंने ही अर्थात् श्रीकृष्ण ने अपनी मर्यादा का पालन नहीं किया। उन्हें श्रीकृष्ण से प्रेम-प्राप्ति की आशा थी, परंतु उन्हें योग का संदेश प्राप्त हुआ। अब वे धैर्य कैसे धारण करें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 8.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए ॥

(क) गोपियाँ यह क्यों कहती हैं कि श्रीकृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है?

(ख) गोपियों को श्री कृष्ण की बुद्धि के विषय में कैसा लगता है?

(ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण को राजा का क्या कर्तव्य याद दिलाती हैं?

Answer:

(क) गोपियों को लगता है कि श्रीकृष्ण अब सीधे-सरल स्वभाव के नहीं रहे। उनके व्यवहार में चतुराई झलकने लगी है। वह राजनीतिज्ञों की भाँति चतुर-चालाक हो गए हैं। उन्होंने स्वयं न आकर उद्धव को उनके पास भेजा है।

(ख) गोपियों को श्रीकृष्ण की बुद्धि के बारे में ऐसा लगता है कि उनकी बुद्धि अधिक बढ़ गई है। तभी वे चातुर्यपूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। उन्होंने उद्धव के हाथ योग-संदेश भी इसीलिए भेजा है। उन्हें लगता है कि श्रीकृष्ण की बुद्धि पर राजनीति का प्रभाव अधिक पड़ गया है।

(ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण को राजा का यह कर्तव्य याद दिलाती हैं। राजा का कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा के हितों की रक्षा करे। उन्हें न तो कभी सताए और न ही उनके कष्टों को कभी बढ़ाए। अन्याय से उनकी रक्षा करे एवं अपने 'राजधर्म' का पालन करे।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 9.

उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

Answer:

उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल लगी गागर से की है। उद्धव का व्यवहार उस कमल के पत्ते के समान है जो जल में उत्पन्न होने पर भी जल के प्रभाव से रहित है। उनका व्यवहार उस तेल लगी गागर के समान है जो जल में होने पर भी, व जल की बूँद का स्पर्श पाकर भी उस के प्रभाव से रहित रहती है। वैसे ही उद्धव कृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम और अनुराग की भावना से कोसों दूर हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 10.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

(क) प्रस्तुत पद किस भाषा में रचा गया है?
(ख) 'मधुकर' कहकर किसे संबोधित किया गया है?
(ग) अनुप्रास अलंकार छाँटकर लिखिए।
(घ) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?
(ङ) 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए'–गोपियां ऐसा क्यों कहती हैं?

Answer:

(क) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में रचा गया है।
(ख) 'मधुकर' उद्धव के लिए संबोधित किया गया है।
(ग) 'समाचार सब', 'गुरु ग्रंथ', 'बढ़ी बुद्धि', 'अब अपनै', 'और अनीति'– अनुप्रास अलंकार के उदाहरण हैं।
(घ) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होता है कि वह प्रजा को सताए नहीं, अपितु उसके हितों की रक्षा करे।
(ङ) 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए'– गोपियाँ ऐसा इसलिए कहती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि अब श्रीकृष्ण चतुर हो गए हैं। उनका व्यवहार गोपियों को छलपूर्ण लग रहा है क्योंकि उन्होंने स्वयं न आकर उद्धव को गोपियों की विरह-व्यथा शांत करने के लिए भेजा है। उद्धव के हाथ योग का संदेश भेजकर उन्होंने राजनीतिक कुशलता का परिचय दिया है।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 11.

'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी'– पंक्ति में गोपियों के कैसे मनोभाव दर्शाए गए हैं?

Answer:

'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी'– पंक्ति में गोपियाँ योग के प्रति अपने मनोभाव प्रकट कर रही हैं। वह सोते-जागते, स्वप्न में, दिन-रात सदैव श्रीकृष्ण का ही स्मरण करती रहती हैं। ऐसे में उद्धव द्वारा दिया गया योग का संदेश उन्हें कड़वी ककड़ी के समान प्रतीत होता है, जिसे कोई खाना नहीं चाहता और न ही जिसके प्रति किसी की रूचि होती है।

Question 12.

गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

Answer:

गोपियाँ निम्न उदाहरणों द्वारा उद्धव को उलाहने देती हैं–

- वे उद्धव को नीरस स्वभाव का मानती हैं। अतः उनकी बातों को कड़वी ककड़ी के समान अग्राह्य बताकर उलाहना देती हैं।
- उन पर श्रीकृष्ण के प्रेम का असर दिखाई नहीं देता इसलिए गोपियाँ उद्धव को कमल के पत्ते के समान अलिप्त एवं तेल के लगी गगरी के समान चिकना अर्थात् प्रेम के प्रभाव से रहित कह कर उलाहना देती हैं।
- उन्हें 'बड़भागी' कहकर उलाहना देती हैं।
- प्रेम की नदी में पैर न डुबोने की बात कहकर उन्हें प्रेम से रहित, निष्ठुर कहकर उलाहना देती हैं।

Question 13.

दूसरों को नीति की सीख देने वाले कृष्ण स्वयं अनीति का आचरण करने लगे। गोपियों ने ऐसा क्यों कहा है?

Answer:

दूसरों को नीति की सीख देने वाले श्रीकृष्ण स्वयं अनीति पर चलने लगे। ऐसा गोपियों ने इसलिए कहा है क्योंकि श्रीकृष्ण ही उन्हें प्रेम की महत्ता बताकर प्रेम अपनाने के लिए प्रेरित करते थे। प्रेम की सार्थकता को पुष्ट करते हुए वे स्वयं भी प्रेम में मग्न रहते थे। लेकिन अब वही श्रीकृष्ण प्रेम के आदर्श रूप को छोड़कर ज्ञान एवं योग के संरक्षक बन गए हैं। उन्होंने गोपियों के लिए प्रेम को छोड़कर ज्ञान और योग का संदेश भेजा है। दूसरों को नीति सिखाने वाले स्वयं अनीति के रास्ते पर चलने लगे हैं।

Question 14.

गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

गोपियाँ जब उद्धव द्वारा श्रीकृष्ण के भेजे गए ज्ञान एवं योग के संदेश को सुनती हैं, तो उन्हें लगता है कि मथुरा पहुँचकर उनका हृदय परिवर्तित हो गया है। वे सरल हृदय के न रहकर कठोर राजनीतिज्ञ बन गए हैं एवं राजनीति की चालें चलने लगे हैं। तभी तो उन्होंने ज्ञान एवं योग का संदेश उनके लिए भेजा है। वे राजधर्म का पालन करने के स्थान पर अनीतिपूर्ण व्यवहार करने लगे हैं। अब उन्हें उनके प्रेम की ज़रा भी परवाह नहीं रही है। इसलिए गोपियाँ श्रीकृष्ण से अपना मन वापिस लेने की बात कह रही हैं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 15.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ॥

(क) गोपियों के मन में क्या इच्छा थी? यह अधूरी क्यों रह गई?

(ख) गोपियाँ तन और मन की व्यथा को किसके सहारे सहन कर रही थीं? उनकी व्यथा बढ़ क्यों गई?

(ग) 'सूरदास अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही'– भाव स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं। अपने इस प्रेम को वे श्रीकृष्ण के सम्मुख प्रकट नहीं कर पाईं। यही उनके मन की इच्छा थी, जो अधूरी रह गई थी और उन्हें निरंतर कचोटती जा रही थी।

(ख) गोपियाँ तन और मन की व्यथा को इस आधार पर सहन कर रही थीं कि एक-न-एक दिन श्रीकृष्ण ब्रज वापस अवश्य लौटेंगे और उन्हें प्रेम का प्रतिदान अवश्य प्राप्त होगा। लेकिन श्रीकृष्ण के द्वारा भेजे गए योग के संदेश को उद्धव द्वारा प्राप्त कर उनकी व्यथा और बढ़ गई।

(ग) 'सूरदास अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही'– पंक्ति के द्वारा गोपियों के हृदय की पीड़ा एवं उलाहना का भाव प्रकट हुआ है। जिस श्रीकृष्ण के प्रेम के कारण उन्होंने अपनी मर्यादाओं को त्याग दिया था, उन्हीं श्रीकृष्ण ने अपनी मर्यादा का पालन नहीं किया। उन्होंने प्रेम के प्रत्युत्तर में योग-संदेश भिजवाकर अपनी मर्यादा का पालन नहीं किया अब वे कैसे धैर्य धारण करें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 16.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।

(क) गोपियाँ किसे बड़ा भाग्यवान बता रही हैं?

(ख) प्रस्तुत काव्यांश में उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है और क्यों?

(ग) गोपियों ने अपने मन की वेदना किस प्रकार प्रकट की है?

Answer:

(क) गोपियाँ उद्धव को बड़ा भाग्यवान बता रही हैं।

(ख) प्रस्तुत काव्यांश में उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी के ऊपर तैरते हुए कमल के पत्ते से की है जो पानी में रहकर पानी के प्रभाव से वंचित रहता है तथा उस तेल लगी गागर से की है जो जल में होने पर भी, जल की बूंद का स्पर्श पाकर भी उसके प्रभाव से रहित रहती है। ऐसी ही स्थिति उद्धव की है जो श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी प्रेम के प्रभाव से वंचित रहते हैं। उनके मन में अनुराग की ज़रा-सी भावना उत्पन्न नहीं होती।

(ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम करती हैं और वियोग में अत्यधिक व्याकुल हैं। उनका श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम अटूट है इसीलिए वे श्रीकृष्ण के वियोग में असहय पीड़ा को सहन कर रही हैं। अपनी पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए वे कहती हैं कि उनकी स्थिति उन चीटियों के समान हो गई है जो गुड़ के प्रति आसक्त होकर ऐसे चिपट जाती हैं कि फिर उससे अलग ही नहीं होना चाहतीं।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 17.

उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

गोपियों को श्रीकृष्ण पर यह पूर्ण विश्वास था कि वे एक-न-एक दिन ब्रज अवश्य लौटेंगे, किंतु श्रीकृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव के साथ योग-संदेश भेजा। उस योग संदेश को प्राप्त कर गोपियाँ बहुत अधिक विरहाकुल हो गईं और वे विरहाग्नि में और अधिक दग्ध हो गईं। इस योग संदेश ने उनकी विरहाग्नि में घी का काम किया। कृष्ण के आने की आशा को समाप्त कर विरह को इस तरह बढ़ाया, जिस तरह घी अग्नि को और अधिक प्रज्ज्वलित करता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 18.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मन की मन ही माँझ रही,
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन-मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ॥

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ख) किसकी इच्छा मन में ही अधूरी रह गई?
(ग) गोपियाँ अपनी व्यथा किसके बल पर सह रही हैं?
(घ) उद्धव के योग–संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(ङ) उपर्युक्त पद्यांश की भाषा का नाम बताइए।

Answer:

(क) कवि का नाम– सूरदास, कविता का नाम– सूरदास के पद
(ख) गोपियों की इच्छा मन में ही अधूरी रह गई।
(ग) गोपियाँ अपनी व्यथा इस बल पर सह रही हैं कि एक-न-एक दिन श्रीकृष्ण ब्रज अवश्य उनके पास लौटकर आएँगे।
(घ) उद्धव के योग संदेश का गोपियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। श्रीकृष्ण के वियोग की ज्वाला में दग्ध गोपियों के लिए उद्धव के योग संदेश ने उनकी विरहाग्नि में घी के समान कार्य किया है और उनकी पीड़ा को और अधिक बढ़ा दिया है।
(ङ) उपर्युक्त पद्यांश की भाषा– ब्रजभाषा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 19.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा कौन-सी है?

(ख) 'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से कवि क्या भाव प्रकट करना चाहता है।

(ग) गोपियाँ उद्धव को बड़भागी क्यों कहती हैं।

Answer:

(क) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा 'ब्रजभाषा' है।

(ख) 'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से गोपियाँ उद्धव के व्यवहार को दर्शा रही हैं। उनका व्यवहार उस तेल लगी गागर के समान है जो जल में होने पर भी, जल की बूँद का स्पर्श पाकर भी उसके प्रभाव से रहित रहती है। वैसे ही उद्धव हैं जो श्रीकृष्ण का सामीप्य प्राप्त करके भी उनके प्रेम और अनुराग से कोसों दूर हैं।

(ग) गोपियाँ उद्धव को बड़भागी इसलिए कहती हैं क्योंकि उन्हें श्रीकृष्ण के निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। किंतु वे उन्हें 'बड़भागी' व्यंग्यपूर्वक कहती हैं क्योंकि वे श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी कृष्ण-प्रेम से सर्वथा अछूते रहे। उन्होंने प्रेम के महत्त्व को नहीं जाना।

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 20.

गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की गहनता को किस प्रकार प्रकट किया है? सूरदास-रचित पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की गहनता को प्रकट करने के लिए स्वयं को हारिल पक्षी के समान बताया है और श्री कृष्ण के प्रेम को हारिल की लकड़ी के समान बताया है जिसे वे दृढ़ता से पकड़े हुए हैं। वे मन, कर्म और वचन से श्री कृष्ण को अपने हृदय में धारण किए हुए हैं। वे श्रीकृष्ण के प्रेम में उस तरह से बँधी हुई हैं, जिस तरह गुड़ से चीटियाँ चिपटी रहती हैं। श्री कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम के कारण ही वे विरह व्यथा को सहन कर रही हैं। इस प्रकार गोपियों ने श्री कृष्ण के प्रति अपनी प्रेम की अनन्यता एवं गहनता को पुष्ट किया है।

Question 21.

सूरदास द्वारा रचित पदों के आधार पर गोपियों के वाक्-चातुर्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

गोपियों का श्री कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम है। श्रीकृष्ण के परम मित्र उद्धव उन्हें ज्ञान और योग का संदेश देते हैं। गोपियाँ अपने वाक्-चातुर्य से उन्हें परास्त कर देती हैं। उनके वाक्-चातुर्य की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(*i*) **सरलता**– गोपियों का हृदय सरल है और वे अपने सरल हृदय से योग का खंडन करती हुई श्रीकृष्ण के प्रति अपना अनन्य प्रेम प्रकट करती है।

(*ii*) **सहजता और स्पष्टता**– गोपियाँ बहुत ही सहज एवं स्पष्ट शब्दों में उद्धव के द्वारा दिए गए योग संदेश को कड़वी ककड़ी तथा रोग की भांति बताती हैं।

(*iii*) **तार्किकता**– गोपियाँ तर्कों द्वारा योग का खंडन कर प्रेम के महत्व को स्पष्ट करती हैं।

(*iv*) **व्यंग्यात्मकता**– गोपियों को उद्धव द्वारा दिए गए योग संदेश पर उद्धव को 'बड़भागी' कहकर उन पर व्यंग्य करती हैं। यहाँ तक कि वे श्रीकृष्ण को भी अपने व्यंग्य का आधार बनाती हैं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 22.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी ॥

(क) 'ऊधौ' कौन हैं? उन्हें बड़भागी क्यों कहा गया है?

(ख) स्नेह-संबंधों के प्रति उनके वैराग्य को किन उदाहरणों से बताया गया है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) गोपिकाओं ने अपने को 'भोरी' क्यों कहा है? उनकी दशा किसकी भाँति हो गई है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) 'ऊधौ' श्री कृष्ण के परममित्र हैं जो गोपियों को श्री कृष्ण का योग संदेश देने के लिए ब्रज आए हैं। उन्हें 'बड़भागी' कहकर वे वास्तव में उन पर व्यंग्य कर रही हैं क्योंकि उद्धव श्री कृष्ण के सान्निध्य में रहकर भी उनके असीम प्रेम से वंचित हैं। वे प्रेम-सागर में रहकर भी न तो प्रेम-बंधन में बँध पाए और न ही प्रेम के स्वरूप से परिचित हो पाए। वास्तव में उनकी स्थिति बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

(ख) स्नेह-संबंधों के प्रति उनके वैराग्य को कमल के पत्ते के समान बताया गया है, जो जल में उत्पन्न होकर भी जल के प्रभाव से रहित है तथा तेल की गागर के समान बताया है जो जल में होने पर भी अर्थात् जल की बूँद का स्पर्श पाकर भी जल के स्पर्श से रहित रहती है। इसी प्रकार उद्धव भी श्री कृष्ण के साथ रहते हुए उनके प्रेम और अनुराग भाव से कोसों दूर हैं।

(ग) गोपिकाओं ने अपने को 'भोरी' इसलिए कहा है क्योंकि उन्होंने भोलेपन में सरल, सहज हृदय से श्री कृष्ण से असीम प्रेम किया, जिसके प्रत्युत्तर में उन्हें योग का संदेश प्राप्त हुआ है। उन्हें लगता है कि वे भोलेपन में श्री कृष्ण द्वारा ठगी गई हैं। उनकी दशा गुड़ से चिपटी चीटियों के समान हो गई है। जिस तरह चीटियाँ गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट गई हैं उसी तरह वे भी श्री कृष्ण के प्रेम में आसक्त हैं और अब वे किसी भी स्थिति में उनसे पृथक नहीं हो सकतीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 23.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं ले आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

(क) श्रीकृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' क्यों कहा है?

(ख) गोपियों को योग की बातें कड़वी ककड़ी-सी क्यों लगती हैं?

(ग) 'जिनके मन चकरी' कथन का भाव स्पष्ट कीजिए और बताइए कि योग की बातें कैसे प्राणियों को सुनानी चाहिए?

Answer:

(क) गोपियाँ श्री कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' इसलिए कहती हैं क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबाई लकड़ी को किसी स्थिति में नहीं छोड़ता, उसका आश्रय थामे रहता है उसी प्रकार गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपने हृदय में बसाए हुए हैं। उनका प्रेम ही गोपियों का एकमात्र सहारा है।

(ख) गोपियों को योग की बातें कड़वी ककड़ी के समान इसलिए लगती हैं क्योंकि उन्हें योग अग्राह्य एवं अरुचिकर प्रतीत होता है। उन्हें श्री कृष्ण से अगाध प्रेम है और उसके समक्ष योग का कोई स्थान नहीं है। उनकी दृष्टि में योग एक ऐसे असाध्य रोग के समान है, जिसे पहले न देखा है, न सुना है और न ही भोगा।

(ग) 'जिनके मन चकरी' कथन का आशय ऐसे लोगों से है जिनका मन चंचल है। जिन्हें अपने आराध्य से एकनिष्ठ प्रेम नहीं है। योग की बातें ऐसे प्राणियों को ही सुननी चाहिए क्योंकि योग मन को स्थिर करता है। जिनका मन चकरी की भाँति घूमता, भटकता रहता है, उनके मन को योग एकाग्र करता है। गोपियों के मन में श्री कृष्ण के प्रति दृढ़ निष्ठा एवं अनन्य प्रेम है। उन्हें योग की बातों की आवश्यकता नहीं है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 24.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग संदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ॥

(क) 'मन की मन ही माँझ रही' पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि गोपियाँ अपने मन के भाव क्यों नहीं कह पाईं?

(ख) वे विरह-व्यथा को क्यों सहती रहीं? अब वह व्यथा उनके लिए दाहक क्यों हो रही है?

(ग) गोपियों के लिए अब धैर्य धारण करना कठिन क्यों हो गया है?

Answer:

(क) गोपियाँ अपने प्रेम को श्रीकृष्ण के सम्मुख प्रकट करना चाहती थीं, परंतु उनके मन की भावना मन में ही रह गई। श्रीकृष्ण मथुरा जाकर बस गए; वापिस लौट कर नहीं आए। वे श्रीकृष्ण से अपने मन की बात कहना चाहती थीं लेकिन उनके स्थान पर उद्धव आ गए।

(ख) गोपियाँ विरह-व्यथा इसलिए सहन कर रही हैं कि एक दिन श्रीकृष्ण ब्रज वापिस अवश्य आएँगे और उन्हें उनका प्रेम प्रतिदान स्वरूप अवश्य मिलेगा। परंतु अब उनकी विरह-व्यथा दाहक हो रही है क्योंकि श्रीकृष्ण ने अपने मित्र के हाथ योग का संदेश उन्हें भेजा हैं। उनका धैर्य टूट गया है और विरहाग्नि उनकी पीड़ा को बढ़ाने लगी है।

(ग) गोपियाँ अभी तक इस आशा से विरह-वेदना सहन कर रही थीं कि श्रीकृष्ण शीघ्र ही ब्रज वापस लौट कर आएँगे। इसी आशा से वे धैर्य धारण किए हुए थीं, परंतु अब उनका धैर्य का बाँध टूट गया है क्योंकि श्रीकृष्ण ने उद्धव के हाथ उनके लिए योग का संदेश भेजकर मर्यादा का उल्लंघन किया है।

2009

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 25.

पाठ्य-पुस्तक में संगृहीत सूरदास के पदों के आधार पर योग-साधना के प्रति गोपियों के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

गोपियों को योग साधना का संदेश कड़वी ककड़ी जैसा लगता है। उनके अनुसार इस साधना की उन्हें आवश्यकता है जिनका मन अस्थिर है। गोपियों का प्रेम श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ है इसलिए योग-साधना का संदेश उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं डालता। कृष्ण के प्रति अटूट स्नेह बंधन को उद्धव का योग-साधन संदेश कम नहीं कर पाता।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 26.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी ॥

(क) गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा है? उन्होंने इस लकड़ी को किस तरह पकड़ा हुआ है?

(ख) गोपिकाओं को योग का उपदेश कैसा लगता है और क्यों?

(ग) गोपियाँ किसे ब्याधि मानती हैं? उसे किसे सौंपने का परामर्श देती हैं?

Answer:

(क) गोपियाँ श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी इसलिए कहती हैं क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में पकड़ी लकड़ी को अपने जीवन का आधार मानकर उसे हर जगह साथ लेकर उड़ता है। उसी प्रकार गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम को अपने जीवन का आधार मानती हैं। वह मन, बचन, कर्म से श्रीकृष्ण के प्रेम को अपने मन में बसाए हैं। वे किसी भी स्थिति से उनसे अलग नहीं होना चाहतीं।

(ख) गोपियों को योग का संदेश कड़वी ककड़ी की तरह लगता है। जिस प्रकार कड़वी ककड़ी में किसी की रुचि नहीं होती, उसी प्रकार गोपियों को योग की बातें अरुचिकर लगती हैं।

(ग) गोपियाँ योग को व्याधि मानती हैं। योग की आवश्यकता उन लोगों को है जिनके मन में अस्थिरता है, जो शीघ्र विचलित हो जाते हैं। गोपियाँ तो अपने आराध्य से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं। उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। वे इसे उसे सौंपने का परामर्श देती हैं जिनका मन चंचल व अस्थिर है, सदैव भटकता रहता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 27.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।

(क) यह काव्यांश किस भाषा में रचा गया है?

(ख) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ग) 'ज्यौं जल माँह तेल की गागरि...' का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(घ) अंतिम पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' क्यों कह रही हैं?

Answer:

(क) यह काव्यांश 'ब्रज' भाषा में रचा गया है।

(ख) 'पुरइनि पात' में 'प' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ग) इन पंक्तियों में उद्धव के अनासक्ति के भाव को व्यक्त किया है। जिस प्रकार कमल के पत्ते व तेल-युक्त मटकी पर जल की एक बूँद नहीं ठहरती, उन पर जल अपना प्रभाव नहीं छोड़ता उसी प्रकार उद्धव भी श्रीकृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम को प्राप्त नहीं कर पाये। उनके प्रेम रसास्वादन से वंचित रहे।

(घ) 'प्रीति-नदी' में रूपक अलंकार है।

(ङ) गोपियाँ उद्धव को बड़भागी इसलिए कहती हैं क्योंकि वह कृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम-बंधन से मुक्त रहे। उन्हें उस विरह अग्नि में नहीं जलना पड़ा, उन्हें वह पीड़ा नहीं सहनी पड़ी जो कृष्ण से अलग होने पर गोपियों को सहन करनी पड़ रही है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 28.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ॥

(क) गोपियों के मन में क्या इच्छा थी? वह अधूरी क्यों रह गई?

(ख) गोपियाँ तन और मन की व्यथा को किसके सहारे सहन कर रहीं थीं? उनकी व्यथा बढ़ क्यों गई?

(ग) 'सूरदास अब धीर धरहिं क्यौ, मरजादा न लही'– काव्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) गोपियाँ श्रीकृष्ण से अथाह प्रेम करती हैं। वे अपने प्रेम-भाव उनके समक्ष व्यक्त न करने के कारण अत्यंत दुखी हैं। उनकी अभिलाषा मन में ही रह गई। वे अपनी प्रेम-व्यथा को दूसरों के सामने भी प्रकट करने में असमर्थ हैं। वे विरह-वेदना को निरंतर झेल रही हैं। प्रेम-अभिव्यक्ति की बात उनके मन में ही रह गई।

(ख) गोपियाँ तन और मन की व्यथा को इस सहारे सह रही हैं कि श्रीकृष्ण कभी उनके पास अवश्य आयेंगे। जब वह आयेंगे तब वह अपनी प्रेम अनुभूतियों को उनके समक्ष प्रकट करेंगी, तो उनको उनके प्रेम का प्रतिदान अवश्य मिलेगा, ऐसा उनका दृढ़ विश्वास है।

(ग) गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रेम में अपनी मर्यादा का त्याग किया, लेकिन कृष्ण ने अपनी मर्यादा का पालन नहीं किया इसलिए अब वे अधिक धैर्य धारण नहीं करना चाहती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in